मलिन बस्ती की महिलाओं में आर्थिक सशक्तिकरण

प्राची शर्मा
शोधार्थी, दे.अ.वि.वि.
इंदौर, मध्य प्रदेश

डॉ. निशा जैन,
प्राध्यापक (विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र)
एम.एल.बी.शा. कन्या स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, किला मैदान, इंदौर (म.प्र.)

शोध सारांश–

प्राचीन मूल्यों की टूटती श्रंखला और बिखरते सांस्कृतिक मूल्यों के युग में महिलाएं दोहरी भूमिकाओं को निभाने के लिए बाध्य हुई इसमें एक पक्ष उनकी आर्थिक निर्भरता का आता है जो उन्हें सक्षम बनाता है और दूसरी ओर सांस्कृतिक मूल्य उन्हें पारिवारिक विवाद जैसी समस्याओं से जूझने को विवश करते है

महिला सशक्तिकरण की दिशा में महिलाओं का आर्थिक रूप से सक्षम होना अत्यंत आवश्यक है इस उद्देश्य को दृष्टि में रखते हुए इंदौर जिले की भोलेनाथ कॉलोनी की मलिन बस्ती की महिलाओं के आर्थिक रूप से स्वावलंबी होने और उनकी परिवार में स्थिति, उनकी निर्णय लेने की सामर्थ्य तथा उनके निर्णयों के महत्त्व का अध्ययन किया गया अध्ययन में साक्षात्कार एवं अनुसूची के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया एवं उसके उपरांत आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या कर जो निष्कर्ष निकाले उससे ज्ञात हुआ है कि आर्थिक रूप से सक्षम होने से महिलाओं की परिवार में भागीदारी बढ़ी है, उनके विचारों और भावनाओं का भी परिवार के सदस्य ध्यान रखते है तथा यह भी देखने में आया कि यदि परिस्थितियां विपरीत है तो आर्थिक रूप से सक्षम महिलाओं में उनसे जूझने की ताकत भी आ गयी है

शब्द कुंजी– मलिन बस्ती, सशक्तिकरण, आर्थिक सशक्तिकरण

प्रस्तावना –

एक महिला को आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षी , लैंगिक तथा आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाकर उसे सशक्त बनाने को महिला सशक्तिकरण कहते है महिला सशक्तिकरण का सबसे व्यापक तत्व है, उन्हें सामाजिक पद, प्रतिष्ठा और न्याय प्रदान करना महिला सशक्तिकरण के प्रमुख लक्षण है, शिक्षा , सामाजिक असमानता और स्थिति, बेहतर स्वास्थ्य, आर्थिक अथवा वित्तीय सुद्रड़ता और राजनीतिक सहभागिता महिला सशक्तिकरण की दिशा में महिला का आर्थिक रूप से सुद्रढ़ होना अत्यंत आवश्यक होता है किन्तु मलिन बस्तियों में जहाँ महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर तो होती है परन्तु उनके हाथ में अधिकार नहीं होते है महिलाओं की आय में पति या परिवार के अन्य पुरुष सदस्यों का अधिकार होता है यह भी देखने में आता है की दिनभर मजदूरी करने के उपरान्त जब वे घर लौटती है तो उनकी अवेहलना की जाती है तथा उन पर अत्याचार भी होता है

सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक अहम् फैसले में कहा है कि– "महिलाओं का वास्तविक आर्थिक सशक्तिकरण तभी होगा, जब वे प्राप्त अधिकारों का लाभ उठा सकें "

स्वामी विवेकान्नद जी ने कहा है– "कि जब तक महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं होगा, विश्व के कल्याण की कोई सम्भावना नहीं है एक पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना संभव नहीं है एतद् परिवर्तन का समय आ गया है"

अतः प्रस्तुत शोध पत्र में मलिन बस्तियों की महिलाओं का आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने तथा परिवार में उनकी स्थिति के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है

पद्धतिशास्त्र–प्रस्तुत शोध–पत्र में शोध अध्ययन पद्धति शोधपत्र की अध्ययन पद्धति है

1 निदर्शन पद्धति– स्वउद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति शोधपत्र की अध्ययन पद्धति है

2 अध्ययन का समग्र– प्रस्तुत शोधपत्र के अध्ययन हेतु मध्यप्रदेश के इंदौर जिले में स्थिति भोलेनाथ कोलोनी मलिन बस्ती की उन 30 महिलाओं का अध्ययन किया गया है, जो काम करके घर चलाने में आर्थिक सहायता करती है

3 अध्ययन की इकाई– स्वउद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा चयनित काम करके, घर चलाने में आर्थिक सहायता करने वाली महिलाएं है

तथ्यों का संकलन–तथ्यों का संकलन प्राथमिक एवं द्वितीयक पद्धतियों के माध्यम से किया गया है

(क) प्राथमिक स्त्रोत–साक्षात्कार एवं अनुसूची के माध्यम से प्रथमिक तथ्यों का संकलन किया गया है

(ख) द्वितीयक स्त्रोत– किताबे, समाचार पत्र, पत्रिकाए एवं इन्टरनेट के माध्यम से द्वितीयक तथ्यों का संकलन किया गया

उद्देश्य –

शोध पत्र का उद्देश्य मलिन बस्ती की महिलाओं में आत्मनिर्भरता के साथ–साथ विपरीत परिस्थितियों से लड़ने की ताकत भी जाग्रत हुई है या नहीं

उपकल्पना

मलिन बस्ती की महिलाएं आर्थिक रूप से निर्भर होती है परंतु आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी नहीं होती है

संकलित सामग्री का विश्लेषण एवं व्याख्या –

30 सूचनादाता की साक्षात्कार एवं अनुसूची के द्वारा जानकारी एकत्रित की गयी तथा इनका वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया गया है प्राप्त आंकड़ों के तथ्यों का वर्गीकरण सारणी के माध्यम से दर्शाया गया है इसके पश्चात सरणी के परिणामों का विश्लेषण किया गया है

तालिका क्रमांक–1
सूचनादाताओं का कार्य का स्तर

क्र.	विकल्प	मत	प्रतिशत
1	व्यवसायी	30	100
2	गृहणी	00	000
	योग	30	100

आर्थिक स्तर भी विचारों में अनेक प्रभाव डालता है इसलिए सूचनादाता के आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी जिनमे 30 में से सर्वाधिक 30 अर्थात 100% सूचनादाता व्यवसाय करती है

तालिका क्रमांक–2
सूचनादाताओं की व्यावसायिक स्थिति

क्र.	विकल्प	मत	प्रतिशत
1	कम्पनी	07	23.33
2	सिलाई	04	13.34
3	मजदूरी	09	30.00
4	स्वयं का व्यवसाय	03	10.00
5	अन्य	07	23.33
	योग	30	100

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश में महिला कामगारों की जनसँख्या का प्रतिशत 25.51% है देश में लगभग प्रत्येक उद्योग में महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है निजी और सरकारी उपक्रमों में भी महिला कामगारों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है इसमें मलिन बस्ती की महिलाओं का भी योगदान देखने को मिलता है इसी सन्दर्भ में महिलाओं की व्यवसायिक स्थिति जानने के सन्दर्भ में सूचनादाताओं के मत किये गये जिनमे 30 में से सर्वाधिक सूचनादाता 09 अर्थात 30% मजदूरी करती है, 07 अर्थात 23.33% सूचनादाता कम्पनी में काम करती है, 07 सूचनादाता अर्थात 23.33% अन्य कार्य करती है, 04 अर्थात 13.34% सूचनादाता सिलाई करती है जबकि 03 अर्थात 10% सूचनादाता स्वयं का व्यवसाय करती है

तालिका क्रमांक–3
सूचनादाताओं की मासिक आय

क्र.	मासिक आय	मत	प्रतिशत
1	1000–3000	07	23.34
2	3001–5000	11	36.66
3	5001 से अधिक	12	40.00
	योग	30	100

आर्थिक सशक्तिकरण के सन्दर्भ में बात की जाये तो यह जानना आवश्यक हो जाता है की महिलाओं की मासिक आय कितनी है इसे ही ध्यान में रखते हुए सूचानादातों की मासिक आय के सम्बन्ध में जानकारी एकत्रित की गयी जिनमे 30 में से सर्वाधिक 12 अर्थात 40.00% सूचानादाताओं ने बताया कि उनकी मासिक आय 5001 से अधिक है, 11 अर्थात 36.66% सूचानादाताओं ने बताया कि उनकी मासिक आय 3001–5000 के बीच है जबकि 07 अर्थात 23.34% सूचानादाताओं ने बताया कि उनकी मासिक आय 1000–3000 के बीच है

तालिका क्रमांक–4
स्त्री–पुरुषों को समान कार्य के लिए समान वेतन देना उचित है इसके सम्बन्ध में मत

क्र.	विकल्प	सूचनादाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	30	100
2	नहीं	00	00.00
3	पता नहीं	00	00.00
	योग	30	1000

स्त्री–पुरुष समानता की बात हमेशा से ही चर्चा में रही है और जब समान कार्य के लिए समान वेतन की बात आती है तो अलग–अलग मत दिए जाते है इसलिए स्त्री–पुरुष को समान कार्य के लिए समान वेतन दिया जाना उचित है इस सम्बन्ध में आंकड़े एकत्रित किये गये जिनमे 30 में से सभी 30 अर्थात 100% सूचानादाताओं से उत्तर दिया कि हाँ, स्त्री–पुरुषों को समान कार्य के लिए समान वेतन दिया जाना उचित है

तालिका क्रमांक–5
नौकरी/व्यवसायी महिलाओं द्वारा स्वयं अर्जित किये गये धन का उपयोग करने के सन्दर्भ में सूचनादाता का मत

क्र.	विकल्प	सूचनादाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	21	70.00
2	नहीं	05	16.64
3	कभी–कभी	04	13.33
	योग	30	100

भारत में जैसा की हमे पता है 25.51% महिलाएं रोजगार में लगी हुई है एवं आय अर्जित कर रही है परन्तु यह आवश्यक नहीं है की वह जो आय अर्जित कर रही है उसका उपयोग वह स्वयं करती है इसी के सन्दर्भ में यह जानने का प्रयास किया गया की क्या मलिन बस्ती की महिलाये स्वयं द्वारा अर्जित आया का उपयोग स्वयं करती है जिसमे 30 में से सर्वाधिक 21 सूचनादाता अर्थात 70% ने कहा हाँ, वे नौकरी/व्यवसाय से अर्जित आय का उपयोग स्वयं करती है, 05 अर्थात 16.64% ने कहा नहीं, वे नौकरी/व्यवसाय से अर्जित आय का उपयोग स्वयं नहीं करती है बल्कि परिवार के अन्य सदस्य उनका उपयोग करते है जबकि केवल 04 सूचनादाता अर्थात 13.33% ने कहा की कभी–कभी वे नौकरी/व्यवसाय से अर्जित आय का उपयोग स्वयं करती है

तालिका क्रमांक–6

मलिन बस्ती के बाहर जाकर नौकरी/व्यवसाय करने की इच्छुक होने के सन्दर्भ में सूचनादाता का मत

क्र.	विकल्प	मत	प्रतिशत
1	हाँ	19	63.34
2	नहीं	08	26.66
3	उत्तर नहीं दिया	03	10.00
	योग	30	100

उपरोक्त प्रश्न में पूछा गया कि क्या सूचनादाता मलिन बस्ती के बाहर जाकर नौकरी/व्यवसाय करना चाहती है, इस सम्बन्ध में आंकडे एकत्रित किये गए जिनमे 30 में से सर्वाधिक 19 अर्थात 63.34% सूचनादाता ने कहा की हां, वे बस्ती के बाहर जाकर नौकरी/व्यवसाय करना चाहती है, 08 अर्थात 26.66% सूचनादाता ने कहा नहीं, वे बस्ती के बाहर जाकर नौकरी या व्यवसाय नहीं करना चाहती है जबकि केवल 03 अर्थात 10% सूचनादाता ने इस सम्बन्ध में कोई उत्तर नहीं दिया

तालिका क्रमांक–7

महिलाएं बस्ती के बाहर जाकर क्यों नौकरी/व्यवसाय करना चाहती है इसके सम्बन्ध में मत (नंबर–19)

क्र.	विकल्प	मत	प्रतिशत
1	अधिक आय अर्जित करने के लिए	19	100
2	घर के बाहर समय बिताने के लिए	09	47.36
3	आत्मसंतुष्टि के लिए	11	57.89
4	कुछ नया सीखने के लिए	17	89.47

उपरोक्त प्रश्न में यहाँ जानकारी एकत्रित की गयी कि मलिन बस्ती की महिलाएं बस्ती के बाहर जाकर क्यों नौकरी/व्यवसाय करना चाहती है इसके सम्बन्ध में आंकडे एकत्रित किये गए जिनमे 30 में से 19 सूचनादाता बस्ती के बाहर जाकर क्यों नौकरी/व्यवसाय करना चाहती है जिनमे 19 अर्थात 100% सूचनादाता ने कहा की वे अधिक आय अर्जित करने के लिए बस्ती के बाहर जाकर नौकरी/व्यवसाय करना चाहती है, 17 अर्थात 89.47% सूचनादाता ने कहा की वे कुछ नया सीखने के लिए बस्ती के बाहर जाकर नौकरी/व्यवसाय करना चाहती है, 11 अर्थात 57. 89% सूचनादाता ने कहा की वे आत्मसंतुष्टि के लिए बस्ती के बाहर जाकर नौकरी/व्यवसाय करना चाहती है जबकि 09 अर्थात 47.36% ने कहा की वे घर से बाहर समय बिताने के लिए बस्ती के बाहर जाकर नौकरी/व्यवसाय करना चाहती है

तालिका क्रमांक–8

नौकरी/व्यवसाय करने वाली महिलायें अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी अच्छे से निभाने के सन्दर्भ में मत

क्र.	विकल्प	सूचनादाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	25	83.34
2	नहीं	03	10.00
3	पता नहीं	02	06.66
	योग	30	100

महिलाएं हमेशा दोहरी या तिहारी जिम्मेदारी निभाती है बदलते समाज में महिलाओं की भूमिकाओं में अंतर तो आया है परन्तु अब भी उनके लिए चुनौतियाँ कम नहीं हुई है इसी सन्दर्भ में उत्तरदाताओं से पूछा गया कि क्या नौकरी/व्यवसाय करने वाली महिलाये अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी अच्छे से निभा पाती है जिसमें 30 में से सर्वाधिक 25 अर्थात 83.34% सूचानादाताओं ने उत्तर दिया कि हां, महिलाएं नौकरी/व्यवसाय के साथ अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी अच्छे से निभाती है, 03 अर्थात 10% सूचानादाताओं ने कहा कि नहीं, नौकरी/व्यवसाय करने वाली महिलाएं अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी अच्छे से नहीं निभाती है जबकि 02 अर्थात 06.66% सूचानादाताओं ने कहा कि पता नहीं, नौकरी/व्यवसाय करने वाली महिलाये अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी अच्छे से निभाती है या नहीं

तालिका क्रमांक–9

पारिवारिक निर्णय में भागीदारी होने के सन्दर्भ में सूचनादाताओं का मत

क्र.	विकल्प	मत	प्रतिशत
1	हाँ	27	90.00
2	नहीं	00	00.00
3	कभी–कभी	03	10.00
	योग	30	100

उपरोक्त प्रश्न में पूछा गया कि क्या पारिवारिक निर्णय में महिलाओं की भागीदारी होती है इस सम्बन्ध में आंकडे एकत्रित किये गए जिनमे 30 में से सर्वाधिक 27 अर्थात 90% सूचनादाता ने कहा की हां, पारिवारिक निर्णय में उनकी भागीदारी होती है जबकि 03 अर्थात 10% सूचनादाता ने कहा की कभी–कभी पारिवारिक निर्णय में उनकी भागीदारी होती है

तालिका क्रमांक–10

आर्थिक रूप से सशक्त होने के बाद क्या मलिन बस्ती की महिलाएं आत्मनिर्भर हुई है इसके सम्बन्ध में मत

कुछ समय से महिलाओं की स्थिति में काफी परिवर्तन आया है वर्तमान में महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सहभागिता सुनिश्चित कर रही है महिलाये पुरुषों के समान दर्जा प्राप्त कर रही है एवं स्वयं को आत्मनिर्भर बना रही है

क्र.	विकल्प	मत	प्रतिशत
1	हाँ	23	76.67
2	नहीं	03	10.00
3	पता नही	04	13.33
	योग	30	100

उपरोक्त प्रश्न में पूछा गया की क्या बस्ती की महिलाये आर्थिक रूप से सशक्त होने के बाद आत्मनिर्भर हुई है इस सम्बन्ध में आंकड़े एकत्रित किये गए जिनमे 30 में से सर्वाधिक 23 अर्थात 76.67% सूचनादाता ने कहा की हां, बस्ती की महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त होने के बाद आत्मनिर्भर हुई है, 04 अर्थात 13.33% ने कहा पता नहीं, बस्ती की महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त होने के बाद आत्मनिर्भर हुई है या नहीं जबकि 03 अर्थात 10% ने कहा की नहीं, बस्ती की महिलाये आर्थिक रूप से सशक्त होने के बाद भी आत्मनिर्भर नहीं हुई है

निष्कर्ष

1 मलिन बस्ती में 30 में से 30 अर्थात 100% सूचनादाता व्यवसायी है अर्थात या तो वे नौकरी कर रही या स्वयं का व्यवसाय कर रही है

2 मलिन बस्ती में से 30 सूचनादाता में से सर्वाधिक 09 अर्थात 30% सूचनादाता मजदूरी का कार्य कर रही है जबकि केवल 03 अर्तात 10% स्वयं का व्यवसाय कर रही है।

3 सूचनादाताओं की मासिक आय के सम्बन्ध में जानकारी एकत्रित की गयी जिनमे सर्वाधिक 12 अर्थात 40.00% सूचनादाता की मासिक आय 5001 से अधिक है एवं 07 अर्थात 23.34% सूचनादाता की मासिक आय 1000–3001 के बीच है।

4 स्त्री–पुरुषों को समान कार्य के लिए समान वेतन देना उचित है इसके सन्दर्भ में आंकड़े एकत्रित किये गए जिनमे 30 में से सभी 30 अर्थात 100% सूचनादाताओं का मानना है कि समान कार्य के लिए समान वेतन दिया जाना उचित है।

5 मलिन बस्ती में 30 में से सर्वाधिक 21 अर्थात 70: सूचनादाता नौकरी/व्यवसाय से अर्जित धन का उपयोग स्वयं करती है जबकि मात्र 04 अर्थात 13.33% सूचनादाता नौकरी/व्यवसाय से अर्जित धन का उपयोग स्वयं कभ–कभी करती है।

6 मलिन बस्ती के बाहर जाकर नौकरी/व्यवसाय करने के सन्दर्भ में सर्वाधिक 19 अर्थात 63.34% सूचनादाता ने बताया की वे बस्ती से बाहर जाकर नौकरी/व्यवसाय करना चाहती है जबकि 03 अर्थात 10% ने इस सम्बन्ध में कोई उत्तर नहीं दिया कहा जा सकता है की मलिन बस्ती की महिलाओं को काम करने के लिए बस्ती के बाहर जाने की स्वतंत्रता प्राप्त हुई है।

7 मलिन बस्ती की महिलाएं बस्ती के बाहर जाकर नौकरी/व्वास्सय क्यों करना चाहती है इसके सम्बन्ध में 19 अर्थात 100% सूचनादाता ने कहा की वे अधिक आय अर्जित करने के लिए बस्ती के बाहर जाकर नौकरी/व्यवसाय करना व्हाहती है जबकि 09 अर्थात 47.36% सूचनादाता ने कहा की वे घर से बाहर समय बिताने के लिए बस्ती के बाहर जाकर नौकरी/व्यवसाय करना चाहती है।

8 सूचना दाताओं से जब इस संबंध में जानकारी एकत्रित की गई क्या व्यवसाय क्या नौकरी पेशा वाली महिलाएं कार्य के साथ अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी अच्छे से निभा पाती है तो 30 में से सर्वाधिक 25 अर्थात् 83.34% ने कहा की हां, महिलाएं व्यवसाय या नौकरी के साथ अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी अच्छे से निभा पाती है जबकि केवल 2 अर्थात 6.66% ने कहा उनको इस संबंध में कोई जानकारी नहीं है अधिकांश उत्तरदाता यही मानती है की महिलाएं व्यवसाय या नौकरी के साथ पारिवारिक जिम्मेदारी भी अच्छे से निभा लेती है।

9 मलिन बस्ती की महिलाओं की पारिवारिक निर्णय में भागीदारी के सन्दर्भ में जानकारी एकत्रित की गयी जिनमें सर्वाधिक 27 अर्थात 90% सूचनादाता ने कहा की उनकी पारिवारिक निर्णय में भागीदारी है एवं उनके परिवार के कोई भी निर्णय में उबकी सलाह ली जाती है एवं उसे माना भी जाता है जबकि 03 अर्थात 10% सूचनादाता ने कहा की कभी–कभी वे अपने पारिवारिक निर्णय में भागीदारी देती है।

10 मलिन बस्ती की महिलाएं क्या आर्थिक रूप से सशक्त होने के बाद आत्मनिर्भर हुई है इसके सम्बन्ध में सर्वाधिक 23 अर्थात 76.67% सूचनादाता ने बताया की आर्थिक रूप से सशक्त होने के बाद बस्ती की महिलायें आत्मनिर्भर हुई है जबकि 03 अर्थात 10% सूचनादाता ने बताया की आर्थिक रूप से सशक्त होने के बाद भी बस्ती की महिलाएं आत्मनिर्भर नहीं हुई है

सुझाव

1 मलिन बस्ती की महिलाओं का आर्थिक स्तर सुधारने के लिए सरकार द्वारा संचालित हो रही योजनाओं का क्रियान्वयन सही तरीके से होना चाहिए।
2 मलिन बस्ती के आस–पास या अन्दर रोजगार की व्यवस्था की जानी चाहिए।
3 मलिन बस्ती के अंदर या आस–पास सस्ती और अच्छी शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए ।
4 महिलाओं के कौशल का विकास करने के लिए प्रशिक्षण केंद्र खोले जाना चाहिए ।
5 कार्यस्थल पर महिलाओं की सुरक्षा की एवं उनके बच्चों की देखभाल की व्यवस्था की जानी चाहिए ।
6 कामकाजी महिलों को बचत के बेहतर उपायों के प्रति जागरूक करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1 बोहरा आशारानी– भारतीय नारी, दशा और दिशा, नेशनल पब्लिशिंग हॉउस. नई दिल्ली, 1982
2 कपूर प्रमिला– भारत में मध्यमवर्गीय महिलाएं, इंडिया विकास पब्लिकेशन हॉउस, नई दिल्ली 1976
3 रोहेला सत्यपाल– सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसन्धान
4 आहूजा राम– सामाजिक शोध
5 तिवारी आर. पी. , शुक्ला डी. वी.– भारतीय नारी वर्तमान समस्यायें और उनके समाधान
6 आप्टे प्रभा– भारतीय समाज में नारी, क्लासिक पब्लिसिंग हॉउस, जयपुर 1996
7 गन्दी बस्ती क्षेत्र (सुधार तथा उन्मूलन) अधिनियम–1956, भारत सरकार
8 बैताई आंद्रे– एम्पावरमेंट इकोनोमिक एंड पोलिटिकल वीकली, 1990
9 प्रतियोगिता दर्पण पत्रिका– सितम्बर, 2016
10 योजना पत्रिका– जून, 2012